लकारों की स्वरूप चर्चा -

संस्कृत - व्याकरण शास्त्र में पाणिनि का योगदान अमर है। इनका व्याकरण- प्रस्थान संस्कृत व्याकरण के सभी दस उपलब्ध प्रस्थानों में व्यापकता, गम्भीरता एवं स्वीकार्यता के कारण अग्रणी है। लौकिक संस्कृत के साथ वैदिक भाषा की तुलना एवं इनके शब्दों का सूक्ष्म विवेचन इनके व्याकरण की विशिष्टता है। इनकी अष्टाध्यायी आठ अध्यायों में विभाजित सूत्र-ग्रंथ है, प्रत्येक अध्याय को चार-चार पादों में विभक्त किया गया है। विषय का क्रम प्रकरणों के अनुसार, अनुवृत्ति को ध्यान में रखकर, वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। अष्टाध्यायी को समझने के लिए 'पञ्चपाठी' परिशिष्ट के रूप में लिखा गया है।

① माहेश्वर सूत्र या प्रत्याहार सूत्र अष्टाध्यायी का आधार है। ये प्रत्याहार सूत्रों तक ही सीमित नहीं हैं जैसे - अच् - सम्पूर्ण स्वरवर्ण, हल् - सम्पूर्ण व्यञ्जन वर्ण, प्रत्यय, सुप्, तिङ् इत्यादि के रूप में प्रत्यय-समूह भी इसकी परिधि में आते हैं।

तिङ् प्रकरण की चर्चा से पूर्व लकारों के स्वरूप पर भी चर्चा आवश्यक है। यों तो हम जानते हैं कि लकार दस हैं लेकिन प्रत्याहार के साथ इसके स्वरूप को हम कैसे तैयार करें, यह जानना अति आवश्यक है। सभी लकारों के प्रारंभ में 'ल' है इसलिए ये 'लकार' कहे जाते हैं। इनमें से पहले छः लकारों के अन्त में 'ट' है इसलिए ये 'डित्' (ट् की इत् संज्ञा या लोप) लकार कहलाते हैं और अन्त के चार लकारों में ङ् की इत् संज्ञा होने से 'ङित्' कहलाते हैं।

इन लकारों को प्रत्याहार के क्रम से हम जोड़ते हैं (क्रमशः इन्हें जोड़ा जाता है) और दस लकारों का शुरू करते हैं -

Scanned with CamScanner

ल् – प्रत्याहार – अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ

① ल् + अ = लट् लकार (वर्तमान काल में)
② ल् + इ = लिट् लकार (अनद्यतन परोक्ष भूतकाल में)
③ ल् + उ = लुट् लकार (अनद्यतन भविष्य काल में)
④ ल् + ऋ = लृट् लकार (सामान्य भविष्य काल में)
⑤ ल् + ए = लेट् लकार (यह लकार सिर्फ वेद में ईश्वर के लिए प्रयुक्त होता है।)
⑥ ल् + ओ = लोट् लकार (आज्ञा, या अनुमति अर्थ में)
⑦ ल् + अ + ङ् – लङ् लकार (अनद्यतन भूत काल)
⑧ ल् + इ + ङ् – लिङ् लकार – इसके दो भेद हैं –
  ① विधिलिङ् (चाहिए, विधि बताने के अर्थ में)
  ② आशीर्लिङ् (आशीर्वाद के अर्थ में प्रयुक्त होता है)
⑨ ल् + उ + ङ् = लुङ् लकार – सामान्य भूतकाल।
⑩ ल् + ऋ + ङ् = लृङ् लकार (ऐसा भूत जो वर्तमान को प्रभावित करता हो)

निम्नलिखित श्लोक के द्वारा इनका पूर्ण स्वरूप-परिचय प्राप्त हो जाता है –

'लट् वर्तमाने, लेट् वेदे भूते लुङ् लङ् लिटस्तथा
विध्याशिषोर्लिङ् लोटौ च लुट् लृट् लृङ् च भविष्यति।'

② अनद्यतन परोक्ष भूतकाल – जिस 'भूत' को हमने घटते हुए नहीं देखा और वह इतिहास का विषय है। रामः रावणं ~~बाणे~~ बाणेन ~~जघा~~ जघान।

③ अनद्यतन भविष्य – जो सम्प्रति (आज, अभी) घटित न होकर आगे होगा। यथा – महाविद्यालयः आगामिमासे ~~प्रभृति~~। कक्षां संचालयिष्यति।

⑩ लृङ् – यथा – अद्य श्रमं अकरिष्यत् तर्हि परीक्षायां ~~सफ~~ सफलं अभविष्यत्।

Uma Pathak
Skt Deptt. Content B.A. II

Scanned with CamScanner